==========

AVYAKT MURLI

29 / 08 / 75

==========

29-08-75 ओम शान्ति अव्यक्त बापदादा मधुबन

अब विधि की स्टेज पार कर सिद्धि-स्वरूप बनना है

सर्व रिद्धि-सिद्धियों के दाता, सर्व मनोकामनाओं को परिपूर्ण करने वाले, महादानी-मूर्त, वरदानी मूर्त और अव्यक्त-मूर्त बापदादा बोले -

 ज कौन-सी सभा लगी हुई है? स्वयं को किस स्वरूप में वर्तमान समय देख रहे हो? यूँ तो जैसे बापदादा बहुरूपी है वैसे ही प सब भी बहुरूपी हो। लेकिन इस समय किस स्वरूप को धारण कर इस सभा में बैठी हो? यह जानते हो कि ज की सभा किन्हों की है? बताओ तो वर्तमान समय दुनिया के लोग प श्रेष्ठ त्माओं के कौनसे स्वरूप का हवान कर रहे हैं? प सब श्रेष्ठ त्माओं का हवान करते हैं व एक त्मा का। किसका हवान करते हैं? पका किस स्वरूप में वर्तमान समय हवान करते हैं? अभी दुनिया में कौन-सा समय चल रहा है? हवान किसका चल रहा है? वर्तमान समय दो रूपों से हवान कर रहे हैं। देखो तो वे प

लोगों का ही □ हवान कर रहे हैं और □ प लोगों को मालूम ही नहीं पड़ता।

इस समय सबसे ज्यादा वरदानी व विश्व-कल्याणकारी दाता के रूप में □ प सब श्रेष्ठ □ त्माओं का चारों ओर □ हवान हो रहा है, क्योंकि भक्ति मार्ग द्वारा व भक्ति के □ धार से, यथाशक्ति, श्रेष्ठ कर्मो के द्वारा जो भी अल्पकाल के साधन व सामग्री अर्थात् वैभव □ ज की दुनिया में प्राप्त हैं - उन सब का अल्पकाल की प्राप्ति का सिंहासन □गमगाना शुरू हो गया है। जब कोई का □ धार रूप सिंहासन हिलना शुरू होता है, तो उस समय क्या याद □ ता है? ऐसे समय सदा काल की प्राप्ति कराने वाले व सुख चैन देने वाले बाप और साथ-साथ शिव शक्तियाँ व महादानी वरदानी देवियाँ ही याद □ ती हैं, क्योंकि देवियों अथवा माताओं का हृदय स्नेही और रहमदिल होने के कारण वर्तमान समय माता के रूप का पूजन या □ हवान ज्यादा करते हैं। सिद्धि-स्वरूप अर्थात् सर्व कार्य सिद्ध करने वाली □ त्माओं का □ हवान वर्तमान समय ज्यादा है।

□ जकल सर्व परेशानियों से परेशान निर्बल □ त्मायें, मंज़िल को ढूँढ़ने वाली □ त्मायें और सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये तड़फती हुई □ त्मायें पुरूषार्थ की विधि नहीं चाहतीं, बल्कि विधि के बजाय सहज सिद्धि चाहती हैं। सिद्धि के बाद विधि के महत्व को जान सकेंगी। ऐसी □ त्माओं को □ प विश्वकल् याणकारी □ त्मा का कौन-सा स्वरूप चाहिए? वर्तमान समय चाहिए प्रेम स्वरूप। लॉफुल नहीं, लेकिन लवफुल पहले लव दो फिर लॉ दो।

वे लव के बाद लॉ को भी स्नेह का साधन अनुभव करेंगे क्योंकि बाहर के रूप की चमक वाली दुनिया में व विज्ञान के युग में विज्ञान के साधन बहुत ही हैं, लेकिन जितना भिन्न-भिन्न प्रकार के अल्पकाल की प्राप्ति के साधन निकलते जाते हैं उतना ही सच्चा स्नेह व रूहानी प्यार, स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है। □ त्माओं से स्नेह समाप्त हो, साधनों से प्यार बढ़ता जा रहा है। इसलिए कई प्रकार की प्राप्ति के होते हुए भी स्नेह की अप्राप्ति के कारण सन्तुष्ट नहीं। और भी दिन-प्रतिदिन यह असन्तुष्टता बढ़ेगी। महसूस करेंगे कि यह साधन मंज़िल से दूर करने वाले, भटकाने वाले हैं! ये □ त्मा को तड़फाने वाले हैं। अर्थात् जैसे कल्प पहले का गायन है कि अन्धे की औलाद अन्धे, मृग तृष्णा के समान सर्व प्राप्ति से वंचित ही रहे। ऐसा अनुभव समय-अनुसार चारों ओर करेंगे।

ऐसे समय पर ऐसी □ त्माओं की सर्व मनोकामनायें पूर्ण करने वाली व मन- इच्छित प्रत्यक्ष फल देने वाली कौनसी □ त्मायें निमित्त बनेंगी? जो स्वयं सिद्धि स्वरूप हों, दिन-रात विघ्नों के मिटाने की विधि में न हों। स्वयं बापदादा द्वारा मिले हुए प्रत्यक्ष फल (भविष्य फल नहीं) - अतीन्द्रिय सुख व सर्व-शक्तियों के वरदान प्राप्त हुई वरदानी-मूर्त □ त्मायें होंगी। स्वयं पुकारने वाले नहीं होंगे कि बाबा यह कर दो, यह दे दो! रॉयल रूप से मांगने का अंश भी नहीं होगा। बाबा यह काम □ पका है-□ प तो करेंगे ही! ऐसे स्वयं करने वाले को स्मृति दिलाकर अपने समान मानव नहीं बनायेंगे क्योंकि कहने से करने वाला मनुष्य गिना जाता है। बिना

कहे, करने वाला देवता गिना जाता है। देवताओं के भी रचयिता को क्या बना देते हो? ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान् सर्व-अधिकारी त्माएँ औरों को भी सहज सिद्धि प्राप्त करा सकती हैं।

अपने को चेक करो, साधारण चेकिंग नहीं। चेकिंग भी समय प्रमाण सूक्ष्म रूप से होनी चाहिए। वर्तमान समय के प्रमाण यह चेक करो कि हर सब्जेक्ट में विधिस्वरूप कितने हैं और सिद्धि-स्वरूप कितने हैं? अर्थात् हर सब्जेक्ट में विधि में कितना समय जाता और सिद्धि का कितना समय अनुभव होता है? चारों ही सब्जेक्ट्स में मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों रूप में किस स्टेज तक पहुँचे हैं? यह चेकिंग करनी है।

अभी महारथियों के लिये विधि का समय नहीं है बल्कि सिद्धि-स्वरूप के अनुभव करने का समय है। नहीं तो वर्तमान समय की अनेक परेशानियाँ, अब तक विधि में लगे रहने वाली त्मा को अपनी शान से परे परेशान के प्रभाव में सहज लायेंगी। इसलिये जैसे गायन है कि पाण व अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह-अभिमान व दु:ख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गये। ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। ऐसी स्थिति में रहने वाला ही समस्या-स्वरूप नहीं लेकिन समाधानस्व रूप हो जायेगा, तो वर्तमान समय ऐसी स्थिति चाहिए। ऐसी है? जरा भी हलचल में तो नहीं जाते? क्या होगा, कैसे होगा, हमारा क्या होगा? अचल स्वरूप हो ना? अचल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही विजयी रत्न बनेंगे।

बापदादा □ ज बच्चों की □ ज्ञा पर □ ज्ञाकारी का पार्ट बजा रहे हैं। प्रोग्राम प्रमाण नहीं □ ये हैं - तो फॉलो फादर। कल □ त्माओं का □ ह्वान है, बाप का नहीं! □ प लोग भी अपने विश्व-महाराजन् स्वरूप में व विश्व के मालिक पन के बाल स्वरूप में अच्छी तरह स्थित रहना। जिससे □ पके अपने-अपने भक्त अल्पकाल के लिए भी दर्शन से प्रसन्न तो हो जायें। और फिर सभी अनुभव सुनाना कि सारे दिन में कितने भक्तों को बाप द्वारा भक्ति का फल दिलाया। अपने भक्तों को राजी तो करेंगे न? एक की यादगार नहीं है, एक के साथ □ प सब भी हो। तो कल □ प सबकी जन्माष्टमी मनायेंगे। सभी कृष्ण समान देवताई स्वरूप में तो होंगे न? □ प सबके देवताई स्वरूप के स्मृति का दिन है। दुनिया वाले मनायेंगे और □ प क्या करेंगे? वह मनायेंगे □ प मनाने वालों के प्रति महादानी और वरदानी बनेंगे। अच्छा।

ऐसे सागर को भी स्नेह के गागर में समाने वाले, सदा बाप समान सर्व सिद्धि-स्वरूप, हर सेकेण□ सर्व प्रति विश्व-कल्याणकारी वरदानी, स्वयं द्वारा बाप का साक्षात्कार कराने वाले, साक्षात् बाप स्वरूप साक्षात्कारी मूर्त, सदा निराकारी और सदा सदाचारी श्रेष्ठ □ त्माओं को बापदादा का याद-प्यार और नमस्ते।

जैसे फौरेन में लौकिक लाइफ फास्ट रहती है वैसे □ त्मा के पुरूषार्थ की स्पी□ भी फास्ट है? सेवाधारी हो ना? सेवा के सिवाय और कुछ नहीं, उठते भी सेवा, सोते भी सेवा, स्वप्न भी देखेंगे तो सेवाधारी के रूप में - ऐसे

सेवाधारी हो? हर सेकेण, हर श्वांस सेवा प्रति, स्वयं प्रति नहीं। स्वयं के राम प्रति नहीं, स्वयं के पुरूषार्थ तक नहीं, स्वयं के साथ दूसरों का पुरूषार्थ इसको कहा जाता है सेवाधारी। ऐसे सर्विसएबल का लेबल लगाया है मस्तक में? सर्विसएबल के मस्तक पर कौन-सी निशानी होगी? त्मा रूपी मणि। मस्तक मणि है - वह चमकती हुई नज़र ये यह है सर्विसएबल का लेबल। अच्छा!

इस मुरली की विशेष बातें

1. इस समय भक्त-गण अधिकतर वरदानी, मनोवांछित फल देने वाली विश्व-कल्याणकारी दाता के रूप में प सब श्रेष्ठ त्माओं का ह्वान कर रहे हैं। अतएव अब विधि नहीं सिद्धि-स्वरूप बनो।

2. विज्ञान के युग में बाहरी चमक-दमक वाले साधन तो बहुत हैं, परन्तु सच्चा रूहानी स्नेह व स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है। अतएव अब समय लॉफुल का नहीं, बल्कि लवफुल (प्रेम स्वरूप) बनने का है।

3. स्वयं देह-अभिमान व दु:ख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। तब प समस्या-स्वरूप नहीं बल्कि समाधान-स्वरूप बन जायेंगे।

==========

QUIZ QUESTIONS

==========

प्रश्न 1 :- वर्तमान समय भक्त त्माओं द्वारा हम बच्चो कोे किन दो रूपो से याद करने के संबंध में बापदादा ने क्या बताया है ?

प्रश्न 2 :- वर्तमान समय सुख शांति की प्राप्ति के लिए तड़पती हुई त्माओं को हम विश्वकल्याणकारी त्माओं के किस स्वरूप की अनुभूति चाहिए ?

प्रश्न 3 :- विज्ञान युग मे अनेकों साधन होने के बाद भी त्माओं में असंतुष्टता व्याप्त होने के कारण प्रति बापदादा की समझानी क्या है ?

प्रश्न 4 :- असंतुष्ट त्माओं की सर्व मनोकामनाओ को पूर्ण करने के निमित्त बनने वाली त्माओं की क्या निशानी बापदादा ने बताई है ?

प्रश्न 5 :- बापदादा ने स्व की चेकिंग प्रति क्या समझाया है और क्यों ?

FILL IN THE BLANKS:-

{ सेकेण, वरदानी, मनुष्य, विज्ञान, दु:ख, राम, दाता, देवता, साधन, स्थिति, सेवाधारी, श्रेष्ठ, त्माएँ, स्नेह, साक्षी }

1 स्वयं देह-अभिमान व _____ की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची _____ में स्थित हो नीचे रहने वालों का _____ हो खेल देखो। तब प समस्या-स्वरूप नहीं बल्कि समाधान-स्वरूप बन जायेंगे।

2 _____ के युग में बाहरी चमक-दमक वाले _____ तो बहुत हैं, परन्तु सच्चा रूहानी _____ व स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है।

3 कहने से करने वाला _____ गिना जाता है। बिना कहे, करने वाला _____ गिना जाता है। ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान् सर्व-अधिकारी _____ औरों को भी सहज सिद्धि प्राप्त करा सकती हैं।

4 इस समय भक्त-गण अधिकतर _____, मनोवांछित फल देने वाली विश्व-कल्याणकारी _____ के रूप में प सब _____ त्माओं का हवान कर रहे हैं। अतएव अब विधि नहीं सिद्धि-स्वरूप बनो।

5 हर _____, हर श्वांस सेवा प्रति, स्वयं प्रति नहीं। स्वयं के _____ प्रति नहीं, स्वयं के पुरूषार्थ तक नहीं, स्वयं के साथ दूसरों का पुरूषार्थ इसको कहा जाता है _____।

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- अब समय लवफुल का नहीं, बल्कि लॉफुल (शक्ति स्वरूप) बनने का है।

2 :- चल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही अनमोल रत्न बनेंगे।

3 :- ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो।

4 :- □ त्मा रूपी मणि मस्तक मणि है - वह चमकती हुई नज़र □ ये। यह है सर्विसएबल का लेबल।

5 :- अब विधि की स्टेज पार कर रिद्धि-स्वरूप बनना है।

==========

QUIZ ANSWERS

==========

प्रश्न 1 :- वर्तमान समय भगत □ त्माओ द्वारा हम बच्चो को किन दो रूपो से याद करने के संबंध में बापदादा ने क्या बताया है ?

उत्तर 1 :- बापदादा ने समझाया कि -

❶ इस समय सबसे ज्यादा वरदानी व विश्व-कल्याणकारी दाता के रूप में □ प सब श्रेष्ठ □ त्माओं का चारों ओर □ ह्वान हो रहा है, क्योंकि भक्ति मार्ग द्वारा व भक्ति के □ धार से, यथाशक्ति, श्रेष्ठ कर्मो के द्वारा जो भी अल्पकाल के साधन व सामग्री अर्थात् वैभव □ ज की दुनिया में

प्राप्त हैं - उन सब का अल्पकाल की प्राप्ति का सिंहासन गमगाना शुरू हो गया है।

❷ जब कोई का धार रूप सिंहासन हिलना शुरू होता है, तो ऐसे समय सदा काल की प्राप्ति कराने वाले व सुख चैन देने वाले बाप और साथ-साथ शिव शक्तियाँ व महादानी वरदानी देवियाँ ही याद ती हैं, क्योंकि देवियों अथवा माताओं का हृदय स्नेही और रहमदिल होने के कारण वर्तमान समय माता के रूप का पूजन या हवान ज्यादा करते हैं। सिद्धि-स्वरूप अर्थात् सर्व कार्य सिद्ध करने वाली त्माओं का हवान वर्तमान समय ज्यादा है।

प्रश्न 2 :- वर्तमान समय सुख शांति की प्राप्ति के लिए तड़पती हुई त्माओं को हम विश्वकल्याणकारी त्माओं के किस स्वरूप की अनुभूति चाहिए ?

उत्तर 2 :- इस संबंध में बाबा ने समझाया कि -

❶ जकल सर्व परेशानियों से परेशान निर्बल त्मायें, मंज़िल को ढूँढ़ने वाली त्मायें और सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिये तड़फती हुई त्मायें पुरूषार्थ की विधि नहीं चाहतीं, बल्कि विधि के बजाय सहज सिद्धि चाहती हैं। सिद्धि के बाद विधि के महत्व को जान सकेंगी।

❷ ऐसी त्माओं को प विश्वकल्याणकारी त्मा का वर्तमान समय चाहिए प्रेम स्वरूप। लॉफुल नहीं, लेकिन लवफुल। पहले लव दो फिर लॉ दो। वे लव के बाद लॉ को भी स्नेह का साधन अनुभव करेंगे।

प्रश्न 3 :- विज्ञान युग मे अनेको साधन होने के बाद भी त्माओ में असंतुष्टता व्याप्त होने के कारण प्रति बापदादा की समझानी क्या है ?

उत्तर 3 :- इस संबंध में बापदादा ने समझया कि -

❶ बाहर के रूप की चमक वाली दुनिया में व विज्ञान के युग में विज्ञान के साधन बहुत ही हैं, लेकिन जितना भिन्न-भिन्न प्रकार के अल्पकाल की प्राप्ति के साधन निकलते जाते हैं उतना ही सच्चा स्नेह व रूहानी प्यार, स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है।

❷ त्माओं से स्नेह समाप्त हो, साधनों से प्यार बढ़ता जा रहा है। इसलिए कई प्रकार की प्राप्ति के होते हुए भी स्नेह की अप्राप्ति के कारण सन्तुष्ट नहीं।

❸ दिन-प्रतिदिन यह असन्तुष्टता बढ़ेगी। महसूस करेंगे कि यह साधन मंज़िल से दूर करने वाले, भटकाने वाले हैं! ये त्मा को तड़फाने वाले हैं। अर्थात् जैसे कल्प पहले का गायन है कि अन्धे की औलाद अन्धे, मृग तृष्णा के समान सर्व प्राप्ति से वंचित ही रहे। ऐसा अनुभव समय-अनुसार चारों ओर करेंगे।

प्रश्न 4 :- असंतुष्ट त्माओं की सर्व मनोकामनाओ को पूर्ण करने के निमित्त बनने वाली त्माओं की क्या निशानी बापदादा बताई?

उत्तर 4 :- असंतुष्ट त्माओ की सर्वमनोकामनाओ को पूर्ण करने के निमित्त बनने वाली त्माओ की निशानी प्रति बापदादा ने बताया कि -

❶ जो स्वयं सिद्धि स्वरूप हों, दिन-रात विघ्नों के मिटाने की विधि में न हों।

❷ स्वयं बापदादा द्वारा मिले हुए प्रत्यक्ष फल (भविष्य फल नहीं) - अतीन्द्रिय सुख व सर्व-शक्तियों के वरदान प्राप्त हुई वरदानी-मूर्त त्मायें होंगी।

❸ स्वयं पुकारने वाले नहीं होंगे कि बाबा यह कर दो, यह दे दो! रॉयल रूप से मांगने का अंश भी नहीं होगा। बाबा यह काम पका है- प तो करेंगे ही!

प्रश्न 5 :- बापदादा ने स्व की चेकिंग प्रति क्या समझाया है और क्यों ?

उत्तर 5 :- बापदादा ने स्व की चेकिंग प्रति समझाया है कि -

❶ अपने को चेक करो, साधारण चेकिंग नहीं। चेकिंग भी समय प्रमाण सूक्ष्म रूप से होनी चाहिए।

❷ वर्तमान समय के प्रमाण यह चेक करो कि हर सब्जेक्ट में विधिस्वरूप कितने हैं और सिद्धि-स्वरूप कितने हैं? अर्थात् हर सब्जेक्ट में विधि में कितना समय जाता और सिद्धि का कितना समय अनुभव होता है?

❸ चारों ही सब्जेक्ट्स में मन्सा, वाचा, कर्मणा तीनों रूप में किस स्टेज तक पहुँचे हैं? यह चेकिंग करनी है।

बापदादा ने उपरोक्त चेकिंग करने का □इरेक्शन देने का कारण बताते हुए समझाया कि अभी महारथियों के लिये विधि का समय नहीं है बल्कि सिद्धि-स्वरूप के अनुभव करने का समय है। नहीं तो वर्तमान समय की अनेक परेशानियाँ, अब तक विधि में लगे रहने वाली □ त्मा को अपनी शान से परे परेशान के प्रभाव में सहज लायेंगी। इसलिये जैसे गायन है कि पाण□व अन्त समय में ऊंची पहाड़ी पर गल गए अर्थात् स्वयं देह-अभिमान व दु:ख की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची स्थिति में स्थित हो गए। तो ऐसी स्थिति में रहने वाला ही समस्या-स्वरूप नहीं लेकिन समाधान स्वरूप हो जायेगे।

FILL IN THE BLANKS:-

{ सेकेण, वरदानी, मनुष्य, विज्ञान, दु:ख, राम, दाता, देवता, साधन, स्थिति, सेवाधारी, श्रेष्ठ, त्माएँ, स्नेह, साक्षी }

1 स्वयं देह-अभिमान व _____ की दुनिया के प्रभाव से परे ऊंची _____ में स्थित हो नीचे रहने वालों का _____ हो खेल देखो। तब प समस्या-स्वरूप नहीं बल्कि समाधान-स्वरूप बन जायेंगे।

दु:ख / स्थिति / साक्षी

2 _____ के युग में बाहरी चमक-दमक वाले _____ तो बहुत हैं, परन्तु सच्चा रूहानी _____ व स्वार्थ-रहित प्यार समाप्त होता जा रहा है।

विज्ञान / साधन / स्नेह

3 कहने से करने वाला _____ गिना जाता है। बिना कहे, करने वाला _____ गिना जाता है। ऐसे मास्टर सर्वशक्तिवान् सर्व-अधिकारी _____ औरों को भी सहज सिद्धि प्राप्त करा सकती हैं।

मनुष्य / देवता / त्माएँ

4 इस समय भक्त-गण अधिकतर _____, मनोवांछित फल देने वाली विश्व-कल्याणकारी _____ के रूप में प सब _____ त्माओं का हवान कर रहे हैं। अतएव अब विधि नहीं सिद्धि-स्वरूप बनो।

वरदानी / दाता / श्रेष्ठ

5 हर _____, हर श्वांस सेवा प्रति, स्वयं प्रति नहीं। स्वयं के _____ प्रति नहीं, स्वयं के पुरूषार्थ तक नहीं, स्वयं के साथ दूसरों का पुरूषार्थ इसको कहा जाता है _____।

सेकेण / राम / सेवाधारी

सही गलत वाक्यो को चिन्हित करे:-

1 :- अब समय लवफुल का नहीं, बल्कि लॉफुल (शक्ति स्वरूप) बनने का है। 【✖】

अब समय लॉफुल का नहीं, बल्कि लवफुल (प्रेम स्वरूप) बनने का है।

2 :- चल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही अनमोल रत्न बनेंगे। 【✖】

अचल में कोई हलचल नहीं। ऐसी स्थिति वाले ही विजयी रत्न बनेंगे।

3 :- ऊंची स्थिति में स्थित हो नीचे रहने वालों का साक्षी हो खेल देखो। 【✔】

4 :- □ त्मा रूपी मणि मस्तक मणि है - वह चमकती हुई नज़र □ ये। यह है सर्विसएबल का लेबल। 【✔】

5 :- अब विधि की स्टेज पार कर रिद्धि-स्वरूप बनना है। 【✖】

अब विधि की स्टेज पार कर सिद्धि-स्वरूप बनना है।